उपसंहार

साहित्य रचनाकार के अध्ययन, चिंतन, मनन, अनुभवों का निचोड होता है, ो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक ऊँचाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता है। अत: थम अध्याय में " नीरज " के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है।

कवि "नीरज " का जीवन बचपन से जवानी तक संघर्षमय रहा है। अपने, परिवार ा बोझ सँभालने के कारण उन्हें अत्यंत कठिन प्रसंग बिताने पडे। इसी कारण उनकी कविता ं वेदना की मात्रा अधिक है। फिर भी उनका काव्य निराशावादी नही हैं। जीवन में न्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने मुख्यत: गीत लिखे हैं।

अपने गीतों के कारण काफी लोकप्रियता भी उन्हें मिली। "नीरज" आज एक यक्ति न रहकर पूरे गीतकाव्य की शृंगार निधि हो गये हैं। वे केवल गीतकाव्य की ृंगार निधि ही नहीं बल्कि विकासोन्मुख राष्ट्र का गौरव - मुकुट है। उन्हें आज हिंदी ी तरुण पीढ़ी का एक सशक्त कलाकार माना जाता है। उनकी वाणी में युग - युग ी तडपती, कसकती मानवता की जो सरल पुकार है वह नवीन पीढ़ी के लिए अनुकरणीय ा। इस तरह अल्प में उन्होंने जो ख्याति और सन्मान प्राप्त किया, उतना अन्य किसी ी कवि को नहीं प्राप्त हो गया है।

सरकारी सप्लाई विभाग का क्लर्क हिंदी गीतीकाव्य का शृंगार बनकर एका - क काव्य गगन में चमक उठा, इतनी लोकप्रियता "नीरज" ने प्राप्त की फिर भी उन्हें ाज विवादास्पद मानते हैं। आलोचक उन्हें " सम्मेलनी कवि " " मंचीय कवि " तथा फिल्मी कवि " कहते हैं।

१९४२ में जब देश की राजनीतिक चेतना अंगडाई ले रही थी तभी काव्य म्मेलनों में कवि वैचारिक क्रांति का प्रसार कर रहे थे। उन दिनों काव्य सम्मेलनों को े लोक प्रियता " डॉ. हरिवंशराय बच्चनजी " द्वारा मिली थी, "नीरज " ने उसमें ार चाँद लगा दिए। यह उनका गौरव ही है।

"नीरज " गीतकार हैं। गीतों के कारण उन्हें लोकप्रियता भी मिल गयी। नीरज " के काव्य में परस्पर विरोधी प्रवृत्ति मिलती है। इसी कारण आलोचकों े उनका वैचारिक विकास देखने नहीं मिलता। इसका कारण है उनके काव्य में वेदना

की मात्रा अधिक है।

"नीरज " के गीत महज फिल्मी गीत ही नहीं बल्कि उन गीतों में कविता का असली रूप कूट - कूट कर भरा हुआ नजर आता है।

इस प्रकार " नीरज " के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को देखने के बाद कहा जा सकता है कि -- गीतीकाव्य परम्परा को चोटी तक पहुँचाने का उनका प्रयत्न उल्लेखनीय है, जिससे उनका व्यक्तित्व उभर ही आया है।

उनको सबसे श्रेष्ठ विशेषता यह है कि ---

" वे गीतकार हैं हिंदी कवियों में अकेला गीतकार, जिसे सबसे अधिक पढा और सुना जाता है। "

" ये भाई जरा देख के चलो
आगे भी नहीं
पीछे भी,
दाये भी नहीं
बाये भी,
ऊपर भी नहीं
नीचे भी। "

जैसे गीत आम आदमी की जबान के ही नहीं बल्कि उनके दिल की धडकने बन गये हैं।

इसी लोक प्रियता के कारण उनका गौरव - गान भी होता रहा है। मुंबई की जनता ने " नीरज - गीत - गुंजन " नाम से एक सम्मान समारोह आयोजित किया था। कानपुर तथा एटा आदि स्थानों में भी उनके समारोह हुए उसमें उनका सम्मान हुआ है।

इसलिए "नीरज " की सबसे बडी विशेषता यह मानी जाती है कि कवि नीरज हिंदी कविता में ऐसे गीतकार कवि हैं जिन्हें अधिक पढा और सुना जाता है।

- -

साहित्य की विविधमुखी विचारधारा में मानवतावादी विचारधारा एक महत्वपूर्ण विचारधारा मानी जाती है। अत: द्वितीय अध्याय में " मानवतावाद स्वरूप एवं परिभाषाएँ " स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार मानवता का लक्ष्य है मानव जाति को एक सूत्र बांधना, व्यक्ति से लेकर विश्व तक एकात्मता स्थापित करना। मानवता की सिद्धि है मनुष्य को पशु सामान्य धरातल से ऊपर उठाकर उन्नयन और उत्थान की ओर ले जाना।

मानवतावाद के अर्थ की सर्वोच्च फलश्रुति इस में है कि व्यष्टि मानव से लेकर समष्टि मानव की मंगलाकांक्षा के लिए अपने आपको दलित दास्य की भाँति निचोड देना । इस दृष्टि से साहित्य द्वारा विश्वबंधुत्व, मानव कल्याण, समता, एकता, सर्वभूतहित की भावना को प्रकट करना मानवतावाद के विशाल अर्थ सीमा को ही प्रकट करना है।

इस प्रकार मानवतावाद का अर्थबोध और अर्थ विस्तार एकांगी नहीं है। उसमें मनुष्य के शरीर, मन, बुध्दी और आत्मा के सर्वांगीण विकास का अर्थ अनुस्यूत है । उसमें स्थूल से लेकर सूक्ष्म तक, भौतिक से लेकर अध्यात्म तक, जड से लेकर चैतन्य तक तादात्म्य भाव का संवरण हुआ है।

इस प्रकार मानवतावाद एक ऐसी सार्व - देशीय शाश्वत और व्यापक चिंतन प्रणाली है जिसमें आस्था का स्वर हमेशा सर्व हित की कामना का साथ लेकर गूँजता रहता है।

संक्षेप में मानवतावाद का स्वरूप विस्तार सर्व व्यापक है। एक विशाल और अथांग सागर के समान मानवतावाद सभी वादों को अपने में समा लेता है। इसलिए मानवतावाद विश्व में सर्व व्यापी है, सर्व - श्रेष्ठ है, सर्व - मंगलाकांक्षी है और सर्व सदाचार की परिणति में समाहत है।

इस लघु शोध - प्रबंध के तृतीय अध्याय में हिंदी की आधुनिक कविता में

- -

हिंदी की आधुनिक कविता में विकसित मानववादी प्रवृत्तियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें निम्नांकित अंश प्रमाणित हैं --

१] हिंदी की आधुनिक कविता के विभिन्न साहित्यिक वादों में अंतर्धारा के रूप में मानवतावाद विद्यमान है।

२] ग्रीक मानवतावादियों की भाँति हमारे कवि भी परतंत्रता में भी राष्ट्रवाद तक पहुँच सके हैं।

३] राजा राममोहन राय, विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, गांधी अरविंद, रविंद्र, तिलक, गोखले आदि से प्रभावित कवियों ने मानवतावादी क्षेत्र को सर्वाधिक सारभूत बनाकर, समाज की सडी - गली रूढियाँ तोडने और जाति - पाँति की भेद - भित्ति-काएँ गिराकर ढहा देने में वह कार्य सम्पन्न किया है, जिसका कबीर, तुलसी ने सपना देखा था।

४] सामाजिक शोषण द्वारा सन्तप्त नारी - रूपी भूमात्री को मानवतावादी कवियों ने मुक्ति प्रदान की है।

५] मानवतावादी कविता ने भारती को रूढ़ि प्राचीनता, क्रूढ़ि साम्प्रदायिकता, अशुध्द नवीनता, बद्ध राष्ट्रीयता आदि से मुक्त कर, विशुध्द विश्व - भावना, विश्व-धर्म एवं विश्व - मानव संस्कृति के प्रसन्न प्रसाद प्रदान किये हैं।

६] किसान, कुली, भिक्षुक, विधवा, दीन - दरिद्र आदि की करुण व्यथा - कथा को अभिव्यंग्य रूप में ग्रहण कर, धर्म एवं प्रभुता के अनुचित आक्षेपों पर आक्रमण कर, जनवाद के वैतलिक कवियों ने मानव के स्वत्व, सत्व, तत्व एवं महत्व का गान किया।

७] हिंदी की आधुनिक कविता में मानवतावाद के निम्नांकित प्रकार पाये जाते हैं(1) --

क] सामाजिक मानवतावाद

ख] प्राकृतिक -"-

ग] दार्शनिक -"-

घ] वैज्ञानिक -"-

ङ] धर्म - निरपेक्ष -"-

च] गांधेय -"-

छ] शुद्ध -"-

ज] विश्व -"-

८] भविष्यत् की उज्ज्वलतम काव्यधारा मानवतावाद की ही होगी।

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद - भाव कविता युग, प्रगतिवाद - अभ्युदय कविता युग, प्रयोगवाद - अधिवास्तविक कविता युग, नवतायुग आदि की राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक अंतरराष्ट्रीय दशाओं का विश्लेषण करते हुए, तत्प्रभावित काव्यगत नवीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि का दिग्दर्शन कराया गया है।

इस लघु शोध - प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में कवि " नीरज " के काव्य में मानवतावाद एवं मानव - प्रेम की चर्चा की गयी है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में कवि - नीरज " एक ऐसे कवि है जिन्होंने अपने काव्य जगत् में पग - पग पर मानवतावादी काव्य लिखा। सन १९४४ से सन् १९७५ तक उनके उन्नीस काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इसमें प्रधान बारह काव्य संग्रह माने जाते हैं। उक्त रचनाओं में अधिकांश रचनाएँ मानवतावादी विचारधारा एवं मानव - प्रेम से ही ओत प्रोत है। इसी कारण कवि " नीरज " का मूलस्वर पूर्णत: मानवतावादी है।

" प्राणगीत " इस चतुर्थ काव्यकृति में कवि का दार्शनिक रूप स्पष्ट होता है। कवि की दर्शनिकता ही उनके प्रेम को एक ऐसे स्थल पर पहुँचाती है, जहाँ उनका प्रेम गहन होकर रहस्यभाव बन जाता है। " नीरज " की सामाजिकता, विश्व प्रेम तथा उनकी जीवन के प्रति आस्था ही उन्हें मानवतावादी कहलाती है।

- -

कवि " नीरज " के काव्य में सभी विधानों पर मानव की ही प्रतिष्ठा हुई है। उनकी कविताओं का ध्येय मानव की मानव से मैत्री करना है। कवि ने मानव को सभी धर्मों एवं कर्म - कांडों से भी ऊपर कहा है —

कवि की अधिकांश रचनाओं में मानवतावादी विचारधारा की अभिव्यंजता व्यक्त हुई है । मानव प्रेम का स्वर उनके काव्य में सर्वत्र सुना जाता है। अत: स्पष्ट है कि कवि गोपालदास सकसेना "नीरज " के सभी काव्य संग्रहों में कम " अधिक मात्रा में मानवतावादी विचारधारा का प्रस्फुटन हुआ है।

इस तरह कवि " नीरज " के मानवतावादी विचार शांति तथा प्रेम को ही स्वीकार करते है। कवि का दृढ विश्वास है कि मानवता ही वह शक्ति है जो मानव मन को परिष्कृत कर उसे सन्मार्ग पर लाती है । इसी कारण कवि " नीरज " मानवतावादी काव्यधारा के एक महत्वपूर्ण कवि हैं।